31 दिसम्बर 2020

आचार्य कुंथुसागर जी के अवतरण की हीरक जयंती के अवसर पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अमृत महोत्सव में संबोधन

.....

- अपने दिव्य ज्ञान से विश्व को आलोकित करने और सर्वजनों को ज्ञान प्रदान करने वाले आप सभी धर्मगुरुओं को सादर नमस्कार।

- गुरु आचार्य श्री श्री 108 कुंथुसागर जी की हीरक जयंती के शुभ अवसर पर आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में सम्मिलित होकर मैं असीम हर्ष का अनुभव कर रहा हूं। मैं उनको नमन करता हूं।

- आचार्य श्री कुंथुसागर जी ने अपनी कृपादृष्टि से अन्धकारमय जगत को दिव्य ज्ञान की किरणों से आलोकित किया और उनकी हीरक जयंती के अवसर पर कर्नाटक प्रांत में हुबली, वरूर स्थित नवग्रह तीर्थ के आचार्य श्री श्री 108 गुणाधरनंदी महाराज द्वारा आयोजित किए जा रहे इस कार्यक्रम से भी पूरे विश्व में एक **अलौकिक** प्रकाश का प्रवाह हो रहा है।

- कार्यक्रम में श्री श्री रविशंकर जी, बाबा रामदेव जी, बी. के. शिवानी जी, जैनाचार्य डॉ. लोकेश मुनि जी, आचार्य रत्नसुन्दर विजय जी, सिद्धेश्वर स्वामी जी जैसे स्वनामधन्य महापुरुष उपस्थित हैं। आप सबने समाज में सतगुणों के प्रसार के लिए जो कार्य किये हैं उसके लिए आप सभी का साधुवाद।

- कार्यक्रम में धर्मशाला के डॉ. डी. वीरेंद्र हेगडे जी धर्माधिकारी, श्री कृष्ण कृपा धाम के गीता मनीषी महामंडलेश्वर ज्ञानानन्द स्वामी जी, जगद्गुरू श्री वीर सिंहासना महासंस्थान मठ, सुत्तुरु श्रीक्षेत्र, मैसूर, विश्व गुरु महामंडलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्द जी, ऋषिकेश स्थित परमार्थ निकेतन आश्रम के स्वामी चिदानंद सरस्वती जी महाराज, और श्री महाश्रमण जैन श्वेतांबर तेरापंथी सहित 2000 से भी अधिक संत और मुनि उपस्थित हैं जिनके सान्निध्य में देश के कोने-कोने से आए सभी धर्मों के श्रद्धालुओं को ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप सभी को प्रणाम।

- कुंथुसागर जी के बाद आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार उनके शिष्य आचार्य श्री 108 गुणाधरनंदी जी महाराज कर रहे हैं और अपने गुरु के अलौकिक ज्ञान को लोगों तक पहुंचा रहे हैं। आचार्य जी को भी मेरा नमन।

- **संसार में अलग-अलग देशों में, अलग-अलग क्षेत्रों में स्थानीय आवश्यकताओं और विशेषताओं के आधार पर भिन्न भिन्न कालखण्डों में अलग-अलग धर्मों का उदय हुआ है। परन्तु सभी धर्मों का लक्ष्य, मनुष्य को सत्यमार्ग दिखाना तथा मानवता का कल्याण ही होता है।**

- इस सर्व धर्म सम्मेलन का लक्ष्य धर्म तथा मानव कल्याण विषयों पर सार्थक चर्चा और विचारों का विनिमय करना है। यह बड़ा दुर्लभ संयोग है कि इस मंच पर सभी धर्मों के **प्रख्यात एवं विद्वान** आचार्य उपस्थित हैं।

- **वर्तमान संदर्भ में, इस प्रकार के सम्मेलन अत्यंत प्रासंगिक हैं तथा सामाजिक सद्भावना और सौहार्द स्थापित करने के मुख्य साधन हैं। इसके लिए मैं आयोजक आचार्यजन का साधुवाद करता हूँ।**

- **गुणीजनों,** भारत भूमि का इतिहास सद्भावना एवं सौहार्द का रहा है। इस भूमि पर ऐतिहासिक काल से अन्य सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों के मानने वाले लोग आते रहे हैं। परन्तु यहां के निवासियों ने उनको हमेशा अपने समाज में और हृदय में स्थान दिया है। सामाजिक सद्भाव तथा समरसता हमारे रक्त में है, हमारी जीवन शैली है।

- **हमारी संस्कृति और विरासत का मूल मन्त्र अहिंसा, समानता एवं करुणा है। हमारी संस्कृति मानव ही नहीं बल्कि सभी जीवों, प्रकृति के सभी तत्वों के प्रति सहनशीलता, और सम्मान का भाव रखना सिखाती है।**

- हमारे अंदर प्राचीन काल से ही यह चेतना है कि पर्यावरण और समाज एक दूसरे पर निर्भर हैं तथा हमारा अस्तित्व वृक्षों, वायु, जल, पर्वत तथा धरा के बिना असंभव है। आज इस बात को विज्ञान भी स्वीकार करता है।

- **भारतीय संस्कृति में धर्म का तात्पर्य संकीर्ण धार्मिक मान्यताओं से नहीं है बल्कि यह एक आध्यात्मिक चेतना है। यह उन मूल्यों और दायित्वों की ओर संकेत करता है जो एक आदर्श मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं और जिनका अनुपालन किसी भी धर्मावलम्बी द्वारा किया जा सकता है। इसलिए हमारी संस्कृति समावेशी रही है।**

- इन्हीं समावेशी मूल्यों के आधार पर हमारा स्वतंत्रता संग्राम भी लड़ा गया था। इस आंदोलन में भी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी देश में रहने वाले सभी पंथों और सम्प्रदायों के अनुयायियों को एक साथ लेकर आगे बढे थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त हमारे संविधान में समावेशी विचारधारा को रेखांकित करते हुए सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता दी गयी।

- **आज पूरे विश्व में कोरोना महामारी का अभूतपूर्व संकट व्याप्त है। इसने देश, धर्म, वर्ग की विभिन्नताओं के परे जाकर पूरी मानव जाति को प्रभावित किया है। परन्तु मात्र कोरोना ही नहीं बल्कि इसके अतिरिक्त विश्व के समक्ष अन्य ज्वलंत विषय भी हैं जो पूरी मानवता के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।**

- **जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, आतंकवाद, ये सभी वैश्विक समस्याएं हैं जिनसे पूरी मानवता को खतरा है। इसलिए इन सभी समस्याओं के दीर्घकालीन समाधान के लिए सभी को एक साथ आगे आना होगा, एक वैश्विक प्लान ऑफ एक्शन (Global Plan of Action) निर्धारित करना होगा।**

- **मनुष्य जब दु:खी होता है, किसी विपत्ति में होता है तो ईश्वर और अध्यात्म का सहारा लेता है। ऐसी परिस्थिति में आपके द्वारा आयोजित सर्व-धर्म सम्मेलन मूलत: आध्यात्मिक चेतना एवं जागृति का कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य मानव जाति को सशक्त करना है ताकि मानवता के समक्ष दु:खों का निस्तारण किया जा सके।**

- जैन धर्म का अपना एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। जैन धर्म को मानने वाले लोगों का अपने राष्ट्र, अपने राज्य और अपने समाज के लिए कल्याण कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय इन सभी क्षेत्रों में आपका विशेष योगदान रहा है। आपकी सोच अपने समाज के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए होती है।

- **श्री श्री मंत्र विद्या चक्रवर्ती गुणाधिपति गुणाधारचार्य 108 कुंथुसागर जी गुरुदेव ने धर्म के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। आचार्य जी महाराज 20वीं सदी के महा-तपस्वी चरित्र चूड़ामणि प्रथम आचार्य 108 श्री महावीर कीर्ति जी महाराज के शिष्य हैं।**

- **आचार्य कुंथुसागर जी महाराज ने 18 वर्ष की अल्प आयु में ही हुमचा सिद्ध क्षेत्र पर मुनि दीक्षा ग्रहण की एवं अपने गुरुवर द्वारा उनके समाधि समय पर गणधर पद प्राप्त किया।**

- आचार्य जी ने पूरे देश का **पद भ्रमण** किया है और शताधिक दीक्षाएँ दी हैं तथा अनेकानेक ग्रंथों का लेखन, दुर्लभ ग्रंथों का भाषानुवाद कर पुनर्लेखन करके जिनवाणी का उद्धार तथा प्रचार-प्रसार किया है। आचार्य जी ने कई वाद-विवाद और शास्त्रार्थों में भी हिस्सा लिया है और अपनी विद्वता का बारम्बार प्रमाण दिया है।

- आचार्य कुंथुसागर जी महाराज ने राजस्थान में मेवाड़ क्षेत्र के प्राचीन श्री अणिन्दा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार संपन्न करवाया है, नूतन जिनालय का निर्माण एवं अनेक अन्य पुण्य कार्य किये हैं। उन्होने प्राचीन पौराणिक गाथाओं का ज्ञान वर्तमान आधुनिक काल के परिप्रेक्ष्य में दिया है।

- गुरुदेव जी ऐसे संत हैं जिन्होंने ऐसे अनेक पावन स्थलों का पुनरुद्धार किया, जिसे विस्मृत किया जा रहा था। अनेक पावन स्थलों को वर्तमान काल में विकसित करने के उनके प्रयासों के कारण ही आज हम उन स्थानों के बारे में जानते हैं। **गुरुजी ने मानव जाति को व्यसनमुक्त करने की लिए अथक प्रयास किए हैं। दुनिया को फिर से हरा-भरा करने के लिए गुरुजी सक्रिय रूप से वृक्षारोपण कार्यक्रमों में शामिल होते हैं।**

- 2005 में महाराष्ट्र में श्री क्षेत्र कुन्तुगिरी की स्थापना करके गुरुजी ने अपने स्वप्न को साकार किया। महाविद्या के साथ ही उन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- **पर्यावरण संरक्षण के लिए गुरुजी ने 2013 में 'श्री क्षेत्र कुन्तुगिरी सम्मेदाचल' की स्थापना का महत्वपूर्ण कार्य किया। यह स्थान झारखंड स्थित तीर्थराज सम्मेद शिखर के समान है।** अपने गुरुजी के आशीर्वाद से श्री 108 गुणाधारनंदी महाराज भी समाज सुधार के कार्यकलापों में समान रूप से सक्रिय हैं।

- **महाराज जी के मार्गदर्शन में एस.डी.एम. जैन मठ ट्रस्ट, वरूर की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य सभी को शिक्षा प्रदान करना है।**

- उनके कृतित्व से हमें यह सीखने को मिलता है कि देने की भावना के साथ जब हम आगे बढ़ते हैं तो हम मानव व मानवता के कल्याण के ध्वजवाहक होते हैं।

- जैन दर्शन कहता है कि **'मुमुक्षू'** वह होता है जो मोक्ष प्राप्त करने की चाहना रखता है। परन्तु चाहना मात्र से मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए साधना करनी पड़ती है और परमार्थ के मार्ग रूपी साधना का स्वरूप क्या होना चाहिए, यह हम कुंथुसागर जी के जीवन और कार्यों से ग्रहण कर सकते हैं।

- मैं आचार्य श्री श्री 108 कुंथुसागर जी महाराज के अवतरण की हीरक जयंती के पावन अवसर पर आयोजित इस सर्व धर्म सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ। मैं आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य और शांति की कामना करता हूँ और इस आयोजन के उद्देश्य पूर्ण हों, ऐसी शुभेच्छा करता हूँ। जय जिनेन्द्र।